

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

११/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा सतगुरु जी को नमस्ते। परमात्मा सतगुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप में स्थित हो जाएं... सभी अपना मूलस्वरूप देखें... सभी अपनी लाइट को देखें.. सभी आत्माएं अपने लाइट का अनुभव करें... सभी अपनी लाइट को स्पष्टता से, गहराई से अनुभव करें.. अगले १० सेकंड के लिए सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप को, अपने लाइट के स्वरूप को स्पष्टता से देखें...

सभी ने अपने लाइट का अनुभव किया? जितना आप आपके लाइट के स्थिति में स्थित रहोगे, उतना आपको आपका स्थूल शरीर भी लाइट अनुभव होगा। इस संगमयुग में आत्माओं को अपने लाइट के फ़रिश्ता स्वरूप स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करना चाहिए। कर्म में भी आते, संबंध-संपर्क में भी आते, व्यवहार में आते अपने लाइट के स्वरूप को इमर्ज रखते, अपने फ़रिश्ता स्वरूप स्थिति को इमर्ज रखते हर कर्म करें। आप आपको जो समझते हो, वो आप बन जाते हो, वो आपका स्वरूप बन जाता है। आपने आपको एक लाइट का फ़रिश्ता समझा, तो अपने आप फ़रिश्ता स्वरूप स्थिति का अनुभव आपको होता जाएगा। आप आपको जो विज्वलाइज़ करते हो, वही आपका स्वरूप बन जाता है।

इसलिए संगमयुग में आप आत्मा जिस शरीर में उपस्थित हो — वह हड्डी-मांस का शरीर — उसे हड्डी-मांस का शरीर ना समझते हुए, आप एक फ़रिश्तेके लाइट के शरीर में उपस्थित हो, यही सदा स्वयं को समझ देना। आपने आपको फ़रिश्ता स्वरूप समझा और आपने आपका फ़रिश्ता स्वरूप विज्वलाइज़ किया, तो फ़रिश्तेस्वरूप की अवस्था की वाइब्रेशंस, आपके सभी सूक्ष्म शरीरों के सभी चक्रों में, नाड़ियों में वही ऊर्जा, फ़रिश्ता स्वरूप स्थिति की ऊर्जा प्रवाहित होगी और आपके स्थूल शरीर में भी

फ़रिश्ता स्वरूप स्थिति की ऊर्जा, वाइब्रेशन प्रवाहित होंगे। जितना-जितना आप स्वयं को लाइट के शरीर में अपने आप को देख पाएंगे, समझ पाएंगे, अनुभव कर पाएंगे, उतना-उतना आपको आपका स्थूल शरीर भी लाइट का ही अनुभव होगा। आप आपको जो समझोगे, वही आप आपको अनुभव कर पाओगे।

इसलिए सबसे पहले आपको जो अवस्था प्राप्त करनी है — मूलस्वरूप में स्थित होकर, आपका यह स्थूल शरीर फ़रिश्ते का शरीर है — यह अवस्था अगर आप आत्मा को चाहिए, तो आप आत्मा को यही समझ बार-बार स्वयं को देनी होगी कि, “मैं आत्मा मेरे फ़रिश्ते के लाइट के शरीर में उपस्थित हूँ। मैं आत्मा मेरे फ़रिश्ते के, लाइट के स्वरूप के शरीर में स्थित होकर, अपना पार्ट बजा रही हूँ।” जितना-जितना आप आपको इस अवस्था में देख पाओगे, उतना-उतना आप आपके स्थूल शरीर — जो हड्डी-मांस का बना हुआ है — आप उसके भान से परे होते जाओगे। आपने आपको हड्डी-मांस का पुतला समझा, तो वही समझकर शरीर अंत में छोड़ोगे।

आप आत्मा जो लाइट है, उस लाइट के प्रभाव से आपके हर एक सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों में लाइट ही प्रवाहित होती है। आपका आपके शरीर का जो ओरा है, आभामंडल है, वह भी लाइट का होता है। वह लाइट, जो आप आत्मा से क्रिएट होती है, और वही लाइट सभी के संबंध-संपर्क में आती है, और उसी लाइट से एक-दूसरे के साथ ऊर्जा का आदान-प्रदान होता है। आप आत्मा की जैसी लाइट है, उस अनुसार आपका ओरा बनता है। आप आत्मा की जैसे स्थिति होती है, उस अनुसार आपका ओरा बनता है। अगर आप आत्मा शांत स्वरूप स्थिति में हो, तो अपने आप शांति की ऊर्जा आपके ओरा में रहेगी और आपके संबंध-संपर्क में जो भी आएंगे, उनको शांति ही महसूस होगी; क्योंकि आपसे व्यवहार करते भी उनके साथ आपकी — आप आत्मा की जो शांत स्वरूप अवस्था की ऊर्जा है — वह ऊर्जा का आदान-प्रदान जिनके साथ संबंध-संपर्क में आप आते हो, उनसे होता है और उनको यही लगता है कि आपके साथ रहने से हमें शांति महसूस होती है। यह जो शांति की ऊर्जा है, यह आत्मा के द्वारा निर्माण हुई है क्योंकि आप आत्मा उस स्टेट में हो।

इसलिए आत्मा जब-जब, जिस-जिस गुण या शक्ति के स्वरूप स्थित होती है, वह गुण-शक्तियां सामने वाले को प्रभावित करती हैं। आत्मा को सदैव अपने मूलस्वरूप स्थिति में रहना चाहिए, किसी ना किसी गुण स्वरूप स्थिति में रहना चाहिए। जब-जब आत्मा किसी ना किसी गुण के स्वरूप में स्थित होती है, तो उस समय आत्मा से वह गुण की ऊर्जा वायुमंडल में फैलती है। वायुमंडल में जो भी आते हैं, उन पर उस ऊर्जा का प्रभाव आता है और अपने आप उनकी भी उस गुण स्वरूप स्थिति में, उनकी अवस्था जाने में मदद मिलती है। आपके आत्मा से निर्माण होने वाली हर एक ऊर्जा वायुमंडल पर असर करती है। इसलिए भल आप कॉन्ससियसली कभी सकाश में बैठते हो, तो कॉन्ससियसली सकाश से ऊर्जा फैलती है, पर जब आप कॉन्ससियसली सकाश में नहीं बैठते, फिर भी आप आत्मा की जो स्थिति है, उस स्थिति के अनुसार आपसे, आप आत्मा से वाइब्रेशन लगातार वायुमंडल में फैलते ही रहते हैं और आपसे निकलने वाले वाइब्रेशन से जो भी उस स्थान में आएंगे, उन पर उसका प्रभाव अवश्य आता ही है। इसलिए आपका, आप आत्मा के द्वारा निर्माण हुई एक-एक ऊर्जा से, एक-एक वाइब्रेशन से वातावरण में असर आता है और उसका भी अच्छा या बुरा हिसाब-किताब बनता है; और सिर्फ आत्मा से निकलने वाली वाइब्रेशन से, ऊर्जा से सिर्फ वायुमंडल पर ही असर आता है, इतना ही नहीं, बल्कि उस स्थान में जितनी भी वस्तुएं हैं, जितनी भी चीजें हैं, उन सभी के अंदर आप आत्मा की जैसे स्थिति है, उस स्थिति अनुसार जो वाइब्रेशन क्रिएट होते हैं, वह सारे उनमें प्रवेश हो जाते हैं। इसलिए सदैव सभी आत्माएं अपने स्थिति का संपूर्ण ध्यान रखना। भल आप आत्मा शरीर को लेके विश्राम भी कर रही हो, पर फिर भी उस समय भी आप आत्मा से वाइब्रेशन निकलते ही रहते हैं। इसलिए जब-जब आप आत्मा कॉन्ससियसली आपकी मूलस्वरूप स्थिति की स्थिति में स्थित रहते जाओगे, अपने आप आप आत्मा से अच्छे वाइब्रेशंस ही वातावरण में फैलती जाएगी। आप आत्मा से क्रिएट हुआ हर एक अच्छा वाइब्रेशन, वह आप आत्मा का अच्छा कार्मिक अकाउंट क्रिएट करता है। इसलिए सदैव आप ध्यान में रखना कि आप आत्मा के द्वारा सदैव अच्छे वाइब्रेशन का निर्माण हो, सदैव अच्छी ही ऊर्जा का निर्माण हो। अगर जिस समय आप आत्मा आपकी स्थिति में नहीं

हो, आपके मूलस्वरूप स्थिति में स्थित नहीं हो, तो उस समय आपका मायावी स्वरूप, उसके द्वारा वाइब्रेशन वायुमंडल में फैलते जाते हैं। इसलिए परमात्मा की सबसे प्रमुख शिक्षा है — सदा खुशी में रहना। खुशी यह आत्मा का मूल गुण है। अगर यह गुण छोड़ के आप कोई और विपरीत गुण में स्थिति में होते हो, तो समझ जाना आपकी आत्मा जगह पर नहीं है। आत्मा की जगह मायावी स्वरूप ने ले ली है। क्योंकि आत्मा है तो खुशी है और जिस समय आप खुश नहीं हो, समझ जाना आपकी आत्मा आपके शरीर में उपस्थित नहीं है।

इसलिए खुशी इस गुण के लिए परमात्मा की यही शिक्षा है कि, 'प्राण जाए पर खुशी ना जाए।' हर कोई अपने से चेक करें कि सारे दिन में आप कितना समय, आप आत्मा की खुशी की स्थिति में रहते हो। आत्मा की खुशी अलग है और बाहरी मायावी खुशी अलग है। ऐसे नहीं दिन भर आप हंसते रहो, मुस्कुराते रहो, बड़बड़ाते रहो, गाते रहो, नाचते रहो और कहो कि हम तो खुशी में हैं। यह माया की खुशी है। आत्मा की खुशी आंतरिक खुशी है। उस खुशी में स्थिरता है। उस खुशी में अंतर्मुखता है। उस खुशी की स्थिति में आनंद है। और वही खुशी की स्थिति से आपके चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट आती है। आत्मा की खुशी अलग है। इसलिए आप चेक करना, सारे दिन भर में अगर आप किसी भी बात को लेके थोड़ा भी ऊपर नीचे हो जाते हो, तो आप आत्मा की खुशी चली जाती है। आप आत्मा आपके शरीर में उस समय उपस्थित नहीं रहते हो। आप एक सेकंड के लिए भी अगर मायावी उदासी वाले विपरीत गुण में स्थित होंगे, तो आप नहीं जानते, वो एक सेकंड की उदासी आपके सभी सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों में, सूक्ष्म शरीर में और स्थूल शरीर में कितना बुरा असर करती है। वह मायावी एक सेकंड की उदासी, वह मायावी एक सेकंड की नाराजगी आपके पूरे ओरा को क्रैक कर देती है और आपका ओरा, बाहरी सभी विपरीत अस्तित्वों के लिए एंट्री करने के लिए खुल जाता है। आप जैसे ही किसी विपरीत स्थिति में आ गए, आपका ओरा टूट गया। अभी आप बाहरी परिस्थितियों से, बाहरी और किसी-किसी की मायावी अस्तित्व से बहुत जल्दी प्रभावित होंगे। फिर आपका मन और ऊपर नीचे होना, बुद्धि भटकना, आपको चंचलता महसूस होना, आपके शरीर

में अस्वस्थता आना, आपके शरीर में कहां दर्द होना — यह क्या है? यह आपने बाहर से और ऊर्जाओं को आपके अंदर प्रवेश करवाया। बस आप एक सेकंड के लिए उदास हुए या एक सेकंड के लिए नाराज हुए या एक सेकंड के लिए डिस्टर्ब हुए। आपको लगता होगा, “क्या बड़ी बात है, एक सेकंड के लिए ही तो उदास हुए, तुरंत हम स्थिति में आ गए।” आप नहीं जानते यहां का एक सेकंड, आपके भाग्य का कितना सारा समय समाप्त कर देता है। आपको अब तक वह सूक्ष्म आंखें नहीं मिली हैं, जो आप देख सको आपका रिकॉर्ड — एक सेकंड उदास होने से आपके खाते में क्या जमा होता है? एक सेकंड नाराज होने से आपके खाते में क्या जमा होता है? एक सेकंड डिस्टर्ब होने से आपके खाते में क्या आता है?

परमात्मा ने शिक्षा तो दी है, ‘सदा खुश रहना।’ आपका काम है इस श्रीमत पर चलना। क्योंकि परमात्मा की हर एक श्रीमत के पीछे बहुत गुह्य राज होते हैं, जिससे आपके बहुत सारे कार्मिक अकाउंट को चुत्तु कराया जाता है, आप आत्मा की अवस्था को ऊंचा उठाया जाता है और परमात्मा की उस एक श्रीमत से कल्प-कल्प के लिए आपके अंदर संस्कार बनना शुरू हो जाता है। जो कि आप अगले कल्प में उस संस्कार का, उस सतगुण धारण करने का, वह शिक्षा को धारण करने का परिणाम स्वरूप अच्छा फल अगले कल्प में, अगले जन्मों में मिलता है। यह सब कुछ आपको इतना विस्तार से समझाने का समय नहीं है कि, परमात्मा ने एक श्रीमत दी है तो उससे आपका क्या-क्या परिवर्तन होता है। इसलिए एक ही बात — सिर्फ जो परमात्मा की श्रीमत मिली, आज्ञा मिली, शिक्षा मिली, खुशी-खुशी से राजी-खुशी होकर उस पर चलना। हर एक परमात्मा की श्रीमत पर दिल से राजी-खुशी रहने से, आपके जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आता है वह हर एक श्रीमत की, शिक्षा की, आज्ञा की लिस्ट और उसका परिणाम अंत में, जब ड्रामा पूरा होगा, तब अंत में आपके पास रिकॉर्ड आ जाएगा।

‘सदा खुश रहना’ — इस एक श्रीमत से, आप आत्मा नहीं जानते, आपके कितने जन्मों के संस्कार जो मायावी संस्कार हैं, वह मुक्त होते जाते हैं। आपके मन-बुद्धि-संस्कार में जो भी मायावी ऊर्जाएं हैं, वह सारी मुक्त हो जाती है।

सदा खुश, उसमें भी सदा राजी-खुशी रहने से आपका संपूर्ण परिवर्तन होगा। राजी रहना भी परमात्मा की हर एक शिक्षा के लिए, आज्ञा के लिए जरूरी है। क्योंकि आप आत्मा की बुद्धि अति लिमिटेड है। उस अति लिमिटेड बुद्धि से आप परमात्मा की श्रीमत का अर्थ नहीं समझ पाओगे। परमात्मा की आज्ञा का अर्थ कभी नहीं समझ पाओगे। इसलिए बस, सभी आत्माओं का इस संगम में एक ही कर्तव्य है — परमात्मा की हर शिक्षा पर, हर श्रीमत पर, हर आज्ञा पर सदैव राजी-खुशी रहना। सिर्फ खुश नहीं, राजी भी। राजी माना आपके मन में भी परमात्मा की श्रीमत को लेके, आज्ञा को लेके, शिक्षा को लेके कोई और भी मत नहीं हो। राजी माना ‘जो हुकुम’ — ना आपकी कोई मत हो, ना आपकी कोई राय हो, ना आपका कोई अनुभव हो।

इसलिए लिमिटेड बुद्धि से कभी भी तर्क नहीं करना। वह तर्क आपका विनाश कर देगा कि परमात्मा ने ऐसे कैसे कहा। परमात्मा के हर वचन से क्या होता है यह भी बुद्धि किसी के पास नहीं है कि वो यह सब जान सके। यहां कोई भी अस्तित्व नहीं है, सूक्ष्म में ना स्थूल में, जो परमात्मा के द्वारा उच्चारित हुए एक महावाक्य का क्या परिणाम है, वो समझ सके। इसलिए परमात्मा के लिए वह कहावत है “तेरी गत मत तू ही जाने।”

इसलिए संगम में, इस यूनिवर्स के इस संगम में सभी आत्माओं को परमात्मा से पढ़ना अवश्य है। सभी आत्माओं को अपना संपूर्ण कल्याण और संपूर्ण परिवर्तन चाहते हैं, अपने कल्पों-कल्पों का परिवर्तन चाहते हैं, तो परमात्मा के पास पहुंचना होगा अपने आप को परिवर्तन करने के लिए। क्योंकि परमात्मा से मिली हुई आपके लिए एक श्रीमत, आपका क्या कल्याण करेगी यह आप आत्मा भी नहीं समझ सकते।

इसलिए सदैव हर परिस्थिति में, हर प्रकार के वातावरण में, अपने आप को परमात्मा की श्रीमत में रखना। क्योंकि परमात्मा की श्रीमत, परमात्मा की आज्ञा, परमात्मा की शिक्षाएं ही आपको सदा सेफ रखेगी और आपका कल्याण करेगी। आप आत्मा आपका कल्याण खुद से कभी भी नहीं कर सकते हो।

ना ही कोई कर पाएगा। परमात्मा की शिक्षा, परमात्मा की आज्ञा, परमात्मा की श्रीमत ही आप आत्मा का कल्याण करेगी, आप आत्मा का परिवर्तन करेगी।

सबसे पहले सभी आत्माएं जहां पर भी हो, जिस भी आपके लौकिक स्थान पर हो, सभी अपने अंदर राजी-खुशी रहने का संस्कार धारण करें। क्योंकि आप नहीं जानते यह राजी-खुशी का संस्कार, गुण धारण करने से आगे आपकी कल्याण यात्रा में क्या-क्या आगे परिवर्तन होगा। क्योंकि राजी-खुशी रहना, यह परमात्मा की श्रीमत है और उस श्रीमत में परमात्मा की ताकत भी है। इसलिए आप जहां पर भी हो, जिस भी परिस्थिति में हो कभी किसी को ब्लेम ना करें। अपनी जिम्मेवारी खुद लें और अपने कल्याण और परिवर्तन के लिए अपने अंदर सदा राजी-खुशी रहने का संस्कार धारण करें। इसलिए जैसे सच्ची दिल पर साहब राजी है, माना परमात्मा राजी है वैसे ही राजी-खुशी वाले पर परमात्मा सदा राजी रहते हैं।

सभी आत्माएं चेक करना — आप सारे दिन भर में, कितना समय आप आत्मा आपके खुशी की स्थिति में रहती हो और कितना समय आप कोई और मायावी स्थिति में रहते हो। हर कोई अपना पोतामेल चेक करें, खुशी का। फिर आप ही विचार करना कि कितना परसेंट मायावी विपरीत अस्तित्व में थे और कितना समय आपकी आत्मा उपस्थित थी। राजी-खुशी जैसा बड़ा संस्कार कोई और नहीं है। सभी आत्माएं इसे धारण करें। अगर आपकी सच्ची दिल होगी, तो इस संस्कार को आप आत्मा के अंदर धारण करने के लिए परमात्मा से शक्ति सभी को अवश्य मिलेगी।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः